विश्व हिन्दी न्यास

World Hindi Foundation, Inc.

न्यास समाचार वर्ष 7 अंक 3 अगस्त-सितंबर, सन् 2,006 संपादक - राम चौधरी

विशेष अनुदान

राम एवं राज चौधरी $2,000

नए आजीवन सदस्य

डा. विश्वनाथ ऐंगार (वापिंगर फ़ाल्स, न्यूयार्क) तथा श्रीमती दर्शन कृष्ण (बथेस्डा, मैरीलैन्ड)

राष्ट्रीय निदेशकों का चुनाव

न्यास के विधान के अनुसार 6 निदेशकों का चुनाव दाता सदस्य, 4 निदेशकों का चुनाव शाखा निदेशक, तथा 1 निदेशक का चुनाव वे सदस्य करते हैं जो किसी शाखा से सम्बंधित नहीं हैं। इस समय न्यास की छह शाखायें हैं, अत: उनके शाखा निदेशक चार राष्ट्रीय निदेशकों का चुनाव करेंगे। शाखा निदेशकों का चुनाव स्थानीय शाखा सदस्य करेंगे। निदेशकों का कार्यकाल दो वर्ष का होता है। निदेशक मंडल के चुनाव के पश्चात कार्यकारी मंडल के तीनों पदाधिकारियों का चुनाव होगा।

वर्तमान निदेशकों में 3 निदेशकों, राम चौधरी, कैलाश शर्मा तथा प्रदीप अगरवाल का कार्यकाल 31 दिसम्बर 2006 तक है। यदि वे चाहें तो फिर से चुनाव में खड़े हो सकते हैं। *उम्मीदवारों से निवेदन है कि वे अपनी स्वीकृति, तथा एक सदस्य द्वारा नामांकन, 15 नवम्बर 2006 तक श्री उमाकान्त कुतवाल के पास निम्नलिखित पते पर, डाक अथवा ईमेल द्वारा भेजें।*

Mr. Umakant Kutwal

105-32, 63rd Road, Forest Hills, NY 11375

Phone: (718) 275-1524

Email: uma.kutwal@domino1.cuny.edu

शाखाओं में चुनाव

शाखा सदस्यों द्वारा, शाखा निदेशकों का चुनाव, 15 नवम्बर, 2006 तक समाप्त हो जाना चाहिए। इस समय न्यास की पांच शाखायें हैं, प्रत्येक शाखा में तीन शाखा पदाधिकारियों का चुनाव होगा: निदेशक, सचिव तथा कोषपाल। उनका कार्यकाल, अधिकांशत: दो वर्ष का होता है। शाखा निदेशकों से निवेदन है कि वे अधिक जानकारी के लिए श्री कैलाश शर्मा से सम्पर्क करें, उनके फ़ोन नम्बर हैं - 718-379-5449 (H) or 718-595-5190

न्यास का छठवां अधिवेशन

विश्व हिन्दी न्यास का छठवां अधिवेशन, 28-29 अक्टूबर सन् 2006 को, डफ़ीनो सेन्ट्रल स्कूल, (Defino Central School, Marlboro) मार्लबोरो, न्यू जर्सी में सम्पन्न होरहा है। *अधिवेशन के संचालक हैं, डा. वेद चौधरी।* अधिवेशन का प्रतिपाद्य विषय है: *हिन्दी और महात्मा गान्धी*। अधिवेशन में अनेक हिन्दी प्रदेशों के साहित्यकार पधार रहे हैं, कुछ नाम हैं, *डा. रमाकान्त शर्मा,* (गुजरात), *डा. लक्ष्मी शर्मा,* (मध्यप्रदेश) *श्रीमती शुक्ला शाह* (महाराष्ट्र एवं न्यूयार्क)। *कविसम्मेलन के विशेष आकर्षण हैं, उदीयमान कवि श्री अभिनव शुक्ल।*

अधिवेशन का कार्यक्रम

स्थान: डफ़ीनो सेन्ट्रल स्कूल, शनिवार 28 अक्टूबर, 2006

पंजीकरण	11:00 AM- 1:00 PM
उद्घाटन, सरस्वती वंदना	1:00 PM - 1:30 PM
साहित्य गोष्ठी	1:30 PM- 2:10 PM
महात्मा गान्धी तथा हिन्दी	2:10 PM - 2:40 PM
हिन्दी का प्रतिभास	2:40 PM- 3:00 PM
चाय	3:00 PM- 3:30 PM
बच्चों के कार्यक्रम	3:30 PM- 5:30 PM
सायंभोज	5:30 PM- 6:30 PM
शिक्षकों, दाता सदस्यों, को सम्मान, परिचय: निदेशक मंडल,	
शाखा निदेशक	6:30 PM- 7:00 PM
मुख्य अतिथि श्रीमती देव	7:00 PM- 7:30 PM
कवि सम्मेलन	7:00 PM- 9:50 PM
धन्यवाद	9:50 PM
विसर्जन	10:00 PM

रविवार, 29 अक्टूबर (स्थान की सूचना बाद में)

कार्यक्रम

आम सभा की बैठक	9:30 AM - 11:00 AM
प्रभारी निदेशक, सचिव एवं कोषपाल की रिपोर्ट	
निदेशक मंडल की बैठक	11:00 AM- 12:00 PM
समापन	12:30 PM

सम्पर्क करें - वेद चौधरी (732-972-1489), कैलाश शर्मा (718-379-5449), बिशन अगरवाल (732-536-2688), पद्मिनी प्रसाद (845-297-1668), सीमा खुराना (845-227-8605)

Please Visit: www.worldhindifoundation.org

सम्मान

गत हिन्दी दिवस, 14 सितम्बर, 2006 को, भारत के राष्ट्रपति, महामहिम अब्दुल कलाम द्वारा, राष्ट्रपति भवन में, 32 प्रतिष्ठित साहित्यकारों को हिन्दी सेवी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन पुरस्कारों की स्थापना सन् 1989 में हुई थी। इस वर्ष यह पुरस्कार साहित्यकारों की 2003-2004 की रचनाओं के लिये प्रदान किये गये हैं। प्रत्येक साहित्यकार को एक लाख रुपये की राशि तथा एक शाल प्रदान किया गया। सौभाग्य का विषय है कि, पुरस्कृत साहित्यकारों में से दो साहित्यकार विश्व हिन्दी न्यास से सम्बद्ध हैं।

पहले व्यक्ति हैं, डा. दिनेश्वर प्रसाद, उन्हें उनके शोधकार्य तथा यात्रा-वृत्तान्त के लिए *राहुल सांकृत्यायन सम्मान* से विभूषित किया गया। डा. प्रसाद ने रांची विश्वविद्यालय से हिन्दी में डी. लिट की उपाधि प्राप्त की। पटना विश्वविद्यालय में शिक्षण-शोध करने के पश्चात उन्होंने रांची वश्वविद्यालय से हिन्दी के विभागाध्यक्ष तथा मानविकीय संकायाध्यक्ष के पद पर काम किया, और अवकाश प्राप्त किया। वे फ़ादर कामिल बुल्के द्वारा रचित सुविख्यात अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश, तथा बाइबिल के हिन्दी अनुवाद में उनके घनिष्ठ सहयोगी रहे हैं। उन्हें बिहार राष्ट्र परिषद का साहित्य सेवा सम्मान (1993), तथा राधाकृष्ण सम्मान (1995) में प्रदान किया गया था। उनकी सुपुत्री, वैज्ञानिक, डा. इला प्रसाद न्यास की आजीवन सदस्य हैं, उनकी अनेक रचनायें, न्यास की पत्रिकाओं, हिन्दी जगत तथा विज्ञान प्रकाश में प्रकाशित हुई हैं।

हिन्दीसेवी पुरस्कार प्राप्त करने वाले दूसरे विद्वान हैं, *डा. राय अवधेश कुमार श्रीवास्तव।* उन्हें वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेखन के लिये *आत्माराम पुरस्कार* प्रदान किया गया। इस समय वे न्यास की पत्रिका, *विज्ञान प्रकाश* के स्थानीय सम्पादक हैं। वे भारत सरकार के प्रतिष्ठित संस्थानों, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कार्यवाहक निदेशक रह चुके हैं, लगभग 65 शोधपत्रों का लेखन तथा 62 ग्रंथों का सम्पादन कर चुके हैं। उन्होंने सन् 1973 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से भूविज्ञान में पी एच. डी. प्राप्त की थी, और अपना शोध निबंध हिन्दी में लिखा। *उनके द्वारा सम्पादित तीन ग्रंथों, हिन्दी में विज्ञान-भावना (2003), लोक-विज्ञान तथा साहित्य-साधना (2004), रमेश चन्द्र शर्मा - प्रतिनिधि रचनाये (2005) का प्रकाशन, विश्व हिन्दी न्यास द्वारा किया गया है।*

न्यास की ओर से डा. दिनेश्वर प्रसाद एवं डा. अवधेश कुमार श्रीवास्तव का हार्दिक अभिनन्दन।

जापान में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन

29-30 जुलाई, 2006 को जापान में दो दिवसीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में जापान, चीन, इंडोनेशिया, थाईलैन्ड, मलेशिया, सिंगापुर, अमेरिका तथा भारत के विद्वान पधारे थे। सम्मेलन का उद्घाटन भारतीय राजदूत श्री हेमन्त कृष्णसिंह ने किया, उन्होंने आश्वासन दिया कि भारत सरकार विदेशों में हिन्दी प्रचार के लिए हर सम्भव सहायता करेगी। समारोह की अध्यक्षता टोक्यो विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा विभाग की अध्यक्षा सेत्सुहो इकेहाता ने तथा हिन्दी शिक्षण, पाठ्यक्रम, साहित्यिक अनुवाद, तथा विश्वकोश पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता जापान के विख्यात प्रोफ़ेसर ताशियो तानाका ने की। सम्मेलन के संयोजक थे, *प्रोफ़ेसर सुरेश ऋतुपर्ण,* जो सम्प्रति टोक्यो विश्वविद्यालय में हिन्दी के अतिथि प्रोफ़ेसर हैं। जैसा आप को ज्ञात है *वे विश्व हिन्दी न्यास के अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक तथा हिन्दी जगत के प्रबन्ध सम्पादक भी हैं।*

सम्मेलन के एक सत्र के अध्यक्ष, पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफ़ेसर *डा. सुरेन्द्र गम्भीर* ने भाषाओं के विकास में कम्प्यूटर की व्यापक भूमिका पर प्रकाश डाला, सुप्रसिद्ध हास्य-कवि *प्रो. अशोक चक्रधर* ने रोचक शैली में यूनीकोड पर आधारित प्रदर्शन किया तथा रेल मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व निदेशक *डा. विजय कुमार मलहोत्रा* ने हिन्दी सीखने-सिखाने के लिए कम्प्यूटर की भूमिका को रेखांकित किया। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक प्रो. सूरजभान सिंह ने हिन्दी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने की कठिनाइयों को बताया, *श्री नारायण कुमार* ने, गिरमिटिया भारतीय प्रवासियों द्वारा विषम परिस्थितियों में रहकर, रात के समय, लालटेन की रोशनी में, रामायण के माध्यम से हिन्दी भाषा तथा अपनी संस्कृति को बचाए रखने की चर्चा की। चीन के प्रतिनिधि, *प्रो. जियांग जिंग कुइ* ने *इस बात पर खेद व्यक्त किया कि भारत के अधिकांश लोग जब चीन जाते हैं तो हमारे साथ हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेज़ी में बोलना अधिक पसन्द करते हैं।* उन्होंने कहा कि भारत-चीन सम्बन्धों में आई गरमाहट से चीन में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी है।

समापन सत्र में डा. मधु गोस्वामी, उपसचिव हिन्दी, विदेश मंत्रालय ने आश्वासन दिया कि सरकार प्रस्तावों पर गंभीरतापूर्वक विचार करेगी। कार्यक्रम के समापन सत्र में प्रो. ऋतुपर्ण ने आशा व्यक्त की कि इस सम्मेलन से पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया में हिन्दी प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा।

(यह रिपोर्ट प्रवासी संसार में प्रकाशित, डा. विजय कुमार मलहोत्रा के लेख पर आधारित है, हम उनके बहुत आभारी हैं।)

हिन्दी की अग्नि परीक्षा

सैकड़ों वर्ष पहले संस्कृत, प्राकृत, पाली आदि भाषाओं से जन्मी, अपनी सहोदरा, अवधी, ब्रज, मगधी, आदि भाषाओं के सान्निध्य में पली भाषा को, लगभग दो सौ वर्ष पहले, हिन्दी के नाम से जाना गया। यथोचित राज्याश्रय न मिलने पर भी, साधुजनों की सहायता से हिन्दी अखिल भारतीय सम्पर्क की भाषा बनी। स्वतंत्र भारत के विधान में उसे भारत की राजभाषा बनाने का प्रावधान किया गया, परन्तु वह राजभाषा नहीं बनी, *हिन्दी की अग्नि परीक्षा पूरी नहीं हुई है।*

मुस्लिम शासन में फ़ारसी राजभाषा, *परन्तु जनभाषा हिन्दी थी।* अठारहवीं शताब्दी में मुस्लिम साम्राज्य के विघटन के बाद मराठा साम्राज्य का उदय हुआ, साथ ही, ईस्ट इन्डिया कम्पनी का अधिकार क्षेत्र बढ़ा। मराठों की पराजय के बाद, अगले पचास वर्षों में कम्पनी ने दक्षिण भारत, बंगाल, उड़ीसा, बिहार तथा उत्तरप्रदेश पर अधिकार कर लिया, और आगे चलकर अंग्रेज़ी ने फ़ारसी का स्थान ले लिया।

सन् 1800 में, कम्पनी के पदाधिकारियों को देशी भाषायें सिखाने के उद्देश्य से, कम्पनी की राजधानी, कलकत्ता में फ़ोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की गई। ईसाई मिशनरियों ने इसका लाभ उठाया, और उसका प्रयोग धर्म प्रचार के लिए किया। सन् 1837 में, कम्पनी ने शासन के निचले स्तर तथा अदालती कामों के लिए देशी भाषाओं के प्रयोग की नीति लागू की। बंगाल में बंगला, उड़ीसा में उड़िया भाषा को चुना गया। बिहार, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश में, 70 प्रतिशत से अधिक लोगों की मातृभाषा हिन्दी को, असभ्य लोगों की भाषा बताकर, फ़ारसी लिपि के साथ उर्दू को थोप दिया गया। लगभग सभी मुसलमान तथा उर्दू-फ़ारसी जानने वाले हिन्दू *(निहित वर्ग)* उर्दू के पैरोकार बने। *निहित वर्ग की प्राथमिकता है, व्यक्तिगत स्वार्थ।* कम्पनी की, *फूट डालो और राज्य करो* नीति का सूत्रपात हुआ, और हिन्दी-उर्दू विवाद खड़ा हुआ।

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात, कम्पनी राज्य समाप्त हुआ, भारत ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बना, परन्तु शासन की शिक्षा नीति में अन्तर नहीं आया। सन् 1872 में लॉर्ड मेयो ने उर्दू को बहुत सी रियायतें दीं। 1873-74 में 71 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी माध्यम की मांग करने के बावजूद सन् 1877 में, केवल उर्दू अथवा फ़ारसी की परीक्षा पास करने वालों को सरकारी नौकरियां दी गईं। सन् 1893 में सरकार ने, फ़ारसी तथा नागरी के स्थान पर रोमन लिपि थोपने की चाल चली। हिन्दी के लिए रोमन अथवा फ़ारसी लिपि के प्रयोग के निराकरण के लिए, सन् 1893 में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई। लिपि का प्रश्न महत्वपूर्ण था, इसके समर्थन में भारतेन्दु हरिश्चन्द, तथा महामना मदनमोहन मालवीय जैसे व्यक्ति आये। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के अभियान में तेज़ी आई, जैसा नीचे बताया जायगा, इस अभियान के बीज, बंगाल में बोये जा चुके थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, राष्ट्रीय चेतना की जाग्रति बंगाल से प्रारम्भ हुई। ब्रह्मसमाज की स्थापना हुई, भाषा के विषय में दो *विरोधाभासी* प्रतिक्रियायें हुईः पहली, *राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करने के लिए बंगाली मनीषियों ने, बंगला के बजाय, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सुझाव दिया। दूसरी, अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा की मांग की गई, ताकि भारतीयों को विदेशी ज्ञान प्राप्त हो सके, तथा उन्हें अच्छी नौकरी मिल सके।* प्रारम्भ में दोनों कार्य-कलापों में कोई संघर्ष नहीं था, प्रायः सभी समाज सुधारक तथा स्वतंत्रता आन्दोलन के शीर्ष नेता अंग्रेज़ी में प्रवीण थे। बंगाल की भांति, महाराष्ट्र के प्रार्थनासमाज, गुजरात के आर्यसमाज ने हिन्दी का समर्थन किया, लोकमान्य तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गान्धी, लाला लाजपतराय, हिन्दी के प्रबल समर्थक बने। महात्मा गान्धी के अंग्रेजों तथा अंग्रेज़ी को भारत से निकालने के अभियान से हिन्दी को बहुत बल मिला। हिन्दी स्वराज्य का प्रतीक बनी, हिन्दी साहित्यकार स्वतंत्रता सेनानी बने, हिन्दी साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ।

स्वतंत्रता मिलने के बाद परिस्थितियां बदल गईं। अंग्रेज़ी माध्यम द्वारा शिक्षित भारतीय वैज्ञानिक, अभियंता, डाक्टर उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए, प्रशिक्षण के बाद उन्हें उच्च पदों पर नियुक्ति मिली। भारी संख्या में विदेशों में प्रतिभा-पलायन हुआ, अंग्रेज़ी माध्यम की मांग और साख बढ़ी। *भारत का बौद्धिक वर्ग, अंग्रेज़ी माध्यम का समर्थक, समाज का अत्यन्त शक्तिशाली निहित वर्ग बन गया।* सरकारों द्वारा हिन्दी की अवहेलना तथा व्याप्त भ्रष्टाचार से हिन्दी माध्यम के स्कूलों के शिक्षा-स्तर में भारी गिरावट आई, और किसान-मज़दूर भी मानने लगे हैं कि हिन्दी माध्यम की शिक्षा पूरी तरह से बेकार है। आज वे अपना पेट काट कर बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में भेजने लगे हैं।

परतंत्र भारत में हिन्दी की प्राणशक्ति थी, कि वह भारतीय संस्कृति की वाहिका थी। आधुनिक परिवेश में हिन्दी की प्राणशक्ति है, उसकी जनसाधारण तक आधुनिक ज्ञान-विज्ञान पहुंचा सकने की क्षमता, ताकि किसान-मज़दूरों को अंग्रेज़ी भाषा की बैसाखी का सहारा लेने की आवश्यकता न पड़े। आज विश्व की तीसरी बड़ी भाषा है, परन्तु उस पर संकट के काले बादल मंड़रा रहे हैं, और यदि हमने उनका प्रतिकार न किया तो वह अजायबघर की भाषा बन कर रह जायगी।

World Hindi Foundation, Inc.

A Tax-Exempt Charitable &
Educational Foundation (ID 31-1679275)
Website: www.worldhindifoundation.org

Board of Directors

Executive Director : Ram Chaudhari
54 Perry Hill Road, Oswego, NY, 13126
Ph: (315) 343-3583 (R), (315) 312-2676 (W)
Fax: (315) 312-5424 Email: chaudhar@oswego.edu
Secretary: Kailash Sharma
140-24G, Donizetti Pl., Bronx, NY 10475
Ph: (718) 379-5449 (R), 718) 595-5190 (W)
Email: KCSharma@aol.com
Treasurer: Pradeep Agarwal
3611 H. Hudson Pkwy #9A, Riverdale, NY 10463
Ph. (718) 548-7532, Email: pnagarwal@cs.com
Shashi Agarwal (NJ) (732) 206-1848
Ved Chaudhary (NJ) (732) 972-1489
Padmini Prasad (NY) (845) 297-1668
L. P. Sharma (NY) (315) 682-5742
Anchala Sobrin (NY) (845) 226-2542
Shyam Shukla (CA) (510) 770-1218

International Coordinator: Suresh Rituparna Ph: 81 422 226450

Chapter Directors

Bishan Agrawal, Marlboro (NJ) (732) 536-2688
Kamla P. Gupta Chicago (IL) (847) 612-4244
Seema Khurana, Poughkipsee (NY) (845) 227-8605
Anil Kumar, San Ramone (CA) (408) 393-9730
Meena Rustgi Buffalo (NY) (716) 632-5768
Shukla Shah New York (NY) (718) 539-9729

हिन्दी जगत
प्रकाशन - जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर
Editorial Board
Chief Editor: Ram Chaudhari
54 Perry Hill Road, Oswego, NY 13126
Managing Editor: Prof. Suresh Rituparna
B-203, 2-16-1 Kichijoji, Higashhi-cho, Musashino-shi, Tokyo 180-0002, Japan, Phone: 81-422-22-6450
Shyam Shukla
44949 Couger Circle, Fremont, CA 94539 Ph. (510) 770-1218
Mithilesh Sharma
3 B Vail Street, Norwalk, CT 06850 Ph. (203) 750-0728
Advisors
N. P. Kumar, B-30 Manas Apartments, Mayur Vihar Phase I (Ext) Delhi, 110091, India
Phone: 011-91-112-271-8748
Prof. Ramakant Sharma 33 Tulip BunglowNo 2, Near Surdhara Cir. Thaltej, Ahemdabad, 380 054

न्यास का लक्ष्य
विश्व में हिन्दी का बोध तथा प्रयोग

न्यास के उद्देश्य

1. स्कूलों, कालेजों तथा सामुदायिक शिक्षा संस्थानों में हिन्दी शिक्षण को प्रोत्साहन, तथा विश्वविद्यालयों में हिन्दीपीठों (Hindi Chairs) की स्थापना में योगदान
2. हिन्दी को संयुक्तराष्ट्र की एक अधिकृत भाषा बनाने की दिशा में प्रयत्न
3. भारतीय संस्कृति में निहित मूल्यों का प्रचार

न्यास की सदस्यता

हर व्यक्ति जो न्यास के लक्ष्य तथा उद्देश्यों से सहमत है, न्यास का सदस्य बन सकता है। सदस्यता की दो श्रेणियां हैं -

1. सदस्य वार्षिक $25, विद्यार्थी $12 आजीवन $250
2. दाता सदस्य - इनकी पांच श्रेणियां हैं -

हिन्दी रत्न	$20,000 अथवा इससे अधिक
हिन्दी संरक्षक	$10,000 अथवा इससे अधिक
हिन्दी हितकारी	$5,000 अथवा इससे अधिक
हिन्दी मित्र	$2,500 अथवा इससे अधिक
हिन्दी शुभचिंतक	$1,000 अथवा इससे अधिक

अतिरिक्त अनुदान $_____

कृपया किसी एक श्रेणी पर निशान लगाइए, तथा प्रदीप अगरवाल (Treasurer) के पास चैक द्वारा भेजिए।

Name
Street
City State Zip code
Phone Numbers: Home Office
Email address Date:
Member's Signature

बाल हिन्दी जगत - सम्पादिका अंचला सोब्रिन
Subscription : $10 For Members, $15 to Non-members
Please Write Check to World Hindi Foundation & Send to:
Anchala Sobrin, 20 Presidential Way, Hopewell Junction, NY 12533. Phone : (845) 226-2542

विज्ञान प्रकाश
विश्व हिन्दी न्यास की वैज्ञानिक पत्रिका
मुख्य संपादक - राम चौधरी chaudhar@oswego.edu

BULK RATE

Return Address
54 Perry Hill Road
Oswego, NY 13126

U.S.POSTAGE
PAID
Permit # 567
Oswego, N. Y.